म.प्र. राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
सा विद्या या विमुक्तये

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें
मध्य प्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल

TESS India

# भाषा और साक्षरता

## प्रामाणिक / शुद्ध लेखन

भारत में विद्यालय समर्थित शिक्षक शिक्षा

www.TESS-India.edu.in

http://creativecommons.org/licenses/

The Open University

UKaid from the British people

**एस.आर.मोहन्ती**
**अपर मुख्य सचिव**

अ.शा.पत्र क्र R.S.K/10............
दूरभाष कार्यालय - 0755-4251330
**मध्यप्रदेश शासन**
**स्कूल शिक्षा विभाग**
मंत्रालय, वल्लभ भवन, भोपाल-462 004
भोपाल, दिनांक 20-1-2016

## संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

बच्चों की शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण और रोचक बनाने के लिए स्कूल शिक्षा विभाग निरन्तर प्रयासरत् है। आप सभी के प्रयासों से शिक्षकों के शिक्षण कौशल में भी निखार आया है और शालाओं में कक्षा शिक्षण भी आंनददायी तथा बेहतर हुआ है।

इसी दिशा में शिक्षकों को बाल केन्द्रित शिक्षण की ओर उन्मुख करने और शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के उद्देश्यों को लेकर, TESS India द्वारा मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) का विकास किया गया हैं। इनका उपयोग शिक्षण कार्य में सहजता व सुगमतापूर्वक किया जा सकता है। आशा है कि ये संसाधन, शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन और क्षमतावर्द्धन में लाभकारी और उपयोगी सिद्ध होंगे।

राज्य शिक्षा केन्द्र के संयुक्त तत्वाधान में TESS India द्वारा स्थानीय भाषा में तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया गया हैं। आशा है इन संसाधनों के उपयोग से प्रदेश के शिक्षक और शिक्षक प्रशिक्षक लाभान्वित होंगे और कक्षाओं में पठन पाठन को रूचिकर और गुणवत्तायुक्त बनाने में मदद मिलेगी।
शुभकामनाओं सहित,

(एस.आर.मोहन्ती)

**दीप्ति गौड मुकर्जी**
आयुक्त
राज्य शिक्षा केन्द्र एवं
सचिव
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग

अर्द्ध शा. पत्र क्र. : 8
दिनांक : 12-1-16
पुस्तक भवन, बी-विंग
अरेरा हिल्स, भोपाल-462011
फोन : (का.) 2768392
फैक्स : (0755) 2552363
वेबसाइट : www.educationportal.mp.gov.in
ई-मेल : rskcommmp@nic.in

## संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

सभी बच्चों को रूचिकर और बाल केन्द्रित शिक्षा उपलब्ध हो इसके लिए आवश्यक है कि हमारे शिक्षकों को शिक्षण की नवीनतम तकनीकों और शिक्षण विधियों से परिचित कराया जाए साथ ही इन तकनीकों के उपयोग के लिए उन्हे प्रोत्साहित भी किया जाए। TESS India द्वारा तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) के उपयोग से शिक्षक शिक्षण प्रविधि के व्यावहारिक उपयोग को सीख सकते हैं। इनकी सहायता से शिक्षक न केवल विषय वस्तु को सुगमता पूर्वक पढ़ा सकते हैं बल्कि पठन पाठन की इस प्रकिया में बच्चों की अधिक से अधिक सहभागिता भी सुनिश्चित कर सकते हैं।

राज्य शिक्षा केन्द्र स्कूल शिक्षा विभाग ने स्थानीय भाषा में तैयार किये गये इन मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को अपने पोर्टल www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया है।

आशा हैं, कि आप इन संसाधनों का कक्षा शिक्षण के दौरान नियमित रूप से उपयोग करेंगे और अपने शिक्षण कौशल में वृद्धि करते हुए बच्चों की पढ़ाई को आनंददायक बनाने का प्रयास करेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

(दीप्ति गौड मुकर्जी)

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

## टेस–इण्डिया स्थानीयकृत ओईआर निर्माण में सहयोग

| |
|---|
| **मार्गदर्शन एवं समीक्षा :** |
| श्रीमती स्वाति मीणा नायक, अपर मिशन संचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल |
| डॉ. एच. के. सेनापति, प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र. |
| डॉ. ओ.पी.शर्मा, अपर संचालक, मध्यप्रदेश एससीईआरटी |
| डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल |
| श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल |
| प्रो.जयदीप मंडल, विभागाध्यक्ष विज्ञान एवं गणित शिक्षा संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र. |
| डॉ. आर. रायजादा, सहप्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष विस्तार शिक्षा, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र. |
| डॉ. वी.जी. जाधव, से.नि. प्राध्यापक भौतिक, एनसीईआरटी |
| डॉ. के. बी. सुब्रमण्यम से.नि. प्राध्यापक गणित, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र. |
| डॉ. आई. पी. अग्रवाल से.नि. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र. |
| डॉ. अश्विनी गर्ग सहा. प्राध्यापक गणित संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र. |
| डॉ. एल. के. तिवारी, सहप्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र. |
| श्री एल.एस.चौहान, सहा. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र. |
| डॉ. श्रुति त्रिपाठी, सहा. प्राध्यापक अंग्रेजी, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र. |
| डॉ. रजनी थपलियाल, व्याख्याता अंग्रेजी, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल |
| डॉ. मधु जैन, व्याख्याता शास. उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल |
| डॉ. सुशोवन बनिक, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र. |
| डॉ. सौरभ कुमार मिश्रा, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र. |
| श्री. अजी थॉमस, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र. |
| डॉ. राजीव कुमार जैन, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र. |
| **स्थानीयकरण :** |
| **भाषा एवं साक्षरता** |
| डॉ. लोकेश खरे, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल |
| डॉ. एम.एल. उपाध्याय से.नि. व्याख्याता शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय मुरैना |
| श्री रामगोपाल रायकवार ,कनि. व्याख्याता, डाइट कुण्डेश्वर, टीकमगढ़ |
| डॉ. दीपक जैन अध्यापक, शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय क्र 1 टीकमगढ़ |
| **अंग्रेजी** |
| श्री राजेन्द्र कुमार पाण्डेय, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल |
| श्रीमती कमलेश शर्मा. डायरेक्टर , ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल |
| श्री हेमंत शर्मा, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल |
| श्री मनोज कुमार गुहा वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी. मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल |
| डॉ. एफ.एस.खान, वरि.व्याख्याता, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान (आईएएसई) भोपाल |
| श्री सुदीप दास, प्राचार्य, शास.उ.मा.विद्यालय दालौदा, मन्दसौर |
| श्रीमती संगीता सक्सेना, व्याख्याता, ,शास.कस्तूरबा कन्या उ.मा.विद्यालय भोपाल |
| **गणित** |
| श्री बी.बी. पी. गुप्ता, समन्वयक गणित, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल |
| श्री ए. एच. खान प्राचार्य शास.उ.मा.विद्यालय रामाकोना, छिंदवाड़ा |
| डॉ. राजेन्द्र प्रसाद गुप्त , प्राचार्य शास. जीवाजी ऑब्जर्वेटरी उज्जैन |
| डॉ.आर,सी. उपाध्याय, वरि. व्याख्याता, डाइट, सतना |
| डॉ. सीमा जैन, व्याख्याता, शास. कन्या उ.मा.विद्यालय गोविन्दपुरा, भोपाल |
| श्री सुशील कुमार शर्मा, शिक्षक, शास. लक्ष्मी मंडी उ.मा.विद्यालय, अशोका गार्डन, भोपाल |
| **विज्ञान** |
| डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल |
| डॉ. सुसम्मा जॉनसन, व्याख्याता एस.आई.एस.ई. जबलपुर मध्यप्रदेश |
| डॉ.सुबोध सक्सैना, समन्वयक एससीईआरटी मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल |
| श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल |
| श्री अरूण भार्गव, वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल |
| श्रीमती सुषमा भट्ट, वरि.व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल |
| श्री ब्रजेश सक्सेना, प्राचार्य, एससीईआरटी ,मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल |
| डॉ. रेहाना सिद्दकी से.नि. व्याख्याता सेन्ट फ्रांसिस हा. से. स्कूल भोपाल |

*TESS-India (*विद्यालय समर्थित शिक्षक शिक्षा*)* का उद्देश्य मुक्त शैक्षिक संसाधनों की सहायता से भारत में प्रारंभिक और सेकेण्डरी शिक्षकों के कक्षा अभ्यास व कक्षा निष्पादन को सुधारना है जिसमें वे इन संसाधनों की सहायता से विद्यार्थी-केंद्रित, सहभागी दृष्टिकोणों का विकास कर सकें। टेस इंडिया के मुक्त शैक्षिक संसाधन शिक्षकों के लिए स्कूल पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त,सहयोगी पुस्तिका या संसाधन की तरह हैं। इसमें शिक्षकों के लिए कुछ गतिविधियां दी गई हैं जिन्हे वे कक्षाओ में विद्यार्थियों के साथ प्रयोग में ला सकते हैं, इसके साथ साथ कुछ केस स्टडी दी गई हैं जो यह बताती हैं कि कैसे अन्य शिक्षकों ने पाठ्य विषय को कक्षाओं में पढ़ाया और अपनी विषय संबंधी जानकारियों को बढ़ाने तथा पाठ योजनाओं को तैयार करने में संसाधनों का उपयोग किया।

*TESS-India OER* भारतीय पाठ्यक्रम और संदर्भों के अनुकूल भारतीय तथा अंतर्राष्ट्रीय लेखकों के सहयोग से तैयार किये गये है और ये ऑनलाइन तथा प्रिंट रूप में उपयोग के लिए उपलब्ध हैं *(http://www.tess-india.edu.in)*। *OER* कार्यक्रम से जुड़े प्रत्येक भारतीय राज्य के शिक्षकों के उपयोग के लिए उपयुक्त तथा कई संस्करणों में उपलब्ध हैं तथा शिक्षक व उपयोगकर्ता इन्हे अपनी स्थानीय आवश्यकताओं और सन्दर्भो के अनुरूप इनका स्थानीय करण करके उपयोग कर सकते हैं।

प्रस्तुत संस्करण मध्यप्रदेश की स्थानीय आवश्यकताओं और संदर्भो को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है।

**वीडियो संसाधन**

इस इकाई में कुछ गतिविधियों के साथ यह आइकॉन (संकेत) दिया गया है*:* *.* इसका अर्थ है कि आप उक्त विशिष्ट विषयवस्तु या शैक्षणिक प्रविधि को और अधिक समझने के लिए *TESS-India* के वीडियो संसाधनों की मदद ले सकते हैं।

TESS-India वीडियो ससांधन (Resources) भारतीय परिप्रेक्ष्य में कक्षाओं में उपयोग की जा सकने वाली सीखने–सिखाने की विविध तकनीकों को दर्शाते हैं। हमें यकीन है कि इनसे आपको इसी प्रकार की तकनीकें अपनी कक्षा में करने में मदद मिलेगी। यदि इन वीडियो संसाधनों तक आपकी पहुँच नहीं हो तो कोई बात नहीं। यह वीडियो पाठ्यपुस्तक का स्थान नहीं लेते, बल्कि उसको पढ़ाने में आपकी मदद करते हैं।

*TESS-India* के वीडियो संसाधनों को *TESS-India* की वेबसाइट *http://www.tess-india.edu.in/* पर ऑनलाइन देखा जा सकता है या डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त आप इन वीडियो को सीडी या मेमोरी कार्ड में लेकर भी देख सकते हैं।

संस्करण *2.0* *LL09v1*
Madhya Pradesh

*तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है: http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/*

TESS-India is led by The Open University UK and funded by UK aid from the UK government

## यह इकाई किस बारे में है

इस इकाई में आप लेखन के महत्वपूर्ण कौशल को विकसित करने के लिए अपने विद्यार्थियों को प्रेरित करने हेतु अपनी कक्षा में उद्देश्यपूर्ण, आनंददायक, प्रामाणिक एवं शुद्धलेखन गतिविधियों को शामिल करने पर ध्यान केंद्रित करेंगे। आप मौलिक और प्रतिलेखन के बीच अंतर पर विचार करने के लिए, एक विस्तृत लेख पर केंद्रित पाठ की योजना तैयार करें, और अपने विद्यार्थियों के साथ साझा और सहयोगात्मक लेखन का प्रयास करेंगे।

## इस इकाई से आप क्या सीख सकते हैं

- आप अपने विद्यार्थियों के लेखन की प्रमाणिकता और उद्देश्य को कैसे पहचानेंगे।
- आप अपने विद्यार्थियों के लेखन पाठों में मौलिक लेखन और प्रतिलेखन का किस प्रकार संतुलन करेंगे।
- संवादात्मक और अनौपचारिक शिक्षण को प्रोत्साहित करने वाली साझा लेखन गतिविधियों की किस प्रकार योजना तैयार करेंगे।

## यह तरीका क्यों महत्वपूर्ण है

लेखन के लिए हमेशा दर्शक उपलब्ध होता है, भले ही वह व्यक्ति स्वयं ही क्यों न हो। इसी प्रकार, प्रत्येक लेख का एक उद्देश्य होता है, भले ही वह बाज़ार से चावल की ख़रीदारी करने का सामान्य अनुस्मारक ही क्यों न हो। स्कूलों में, लेखन कार्य में कभी-कभी यह प्रामाणिक दर्शक और उद्देश्य की कमी हो सकती है, विशेषतः जब यह यांत्रिक अभ्यास का स्वरूप ग्रहण कर ले। यदि लेखन-कार्य प्रामाणिक न हो, तो विद्यार्थी यह पूरी तरह नहीं समझ पाएँगे कि वे क्यों असली दुनिया के मामलों पर लिखने में सक्षम हैं, और इस कौशल में कुशलता, योग्यता प्राप्त करना कितना सुखद और रचनात्मक हो सकता है।

विकास लेखन के दो तत्व हैं: संरचना (साहित्यिक रचना) और प्रतिलेखन।

- संरचना को 'लेखक की भूमिका' माना जा सकता है, क्योंकि इसमें विचारों को उत्पन्न और व्यवस्थित करना, तथा उपयोग की जाने वाली भाषा शैली का चयन करने के साथ, यह जानना शामिल होता है कि लेखन को कौन पढ़ेगा (इसका पाठक) और इससे क्या उपलब्धि (उसका प्रयोजन) हासिल होगी।
- प्रतिलेखन को 'सचिव की भूमिका' माना जा सकता है, क्योंकि उसमें यह सुनिश्चित करना शामिल होता है कि लेखन सुपाठ्य है, वर्तनी सही है, विराम चिह्न सही हैं और पाठ की क्रमानुसार योजना उपयुक्त है।

सामान्यतः शिक्षक अपने विद्यार्थियों के प्रतिलेखन तत्व पर मुख्य रूप से ध्यान केंद्रित करने और उसे समझाने तथा सुधारने में समय नश्ट करते हैं। लेकिन, इन दोनोमें, संरचना में महारत हासिल करना विद्यार्थियों के लिए अधिक महत्वपूर्ण है।

जब आपके विद्यार्थी उन्हें दिलचस्प और प्रेरित करने वाले विषय पर लेखन की संरचना कर रहे हों, जब वे अपना लेखन कौशल विकसित कर रहे हों – तब वे अपनी लिखावट, वर्तनी, विराम चिह्न तथा अनुच्छेद संबंधी संलेखन कौशल को भी विकसित कर रहे होते हैं। लेकिन इसकी विपरीत स्थिति उत्पन्न नहीं होती है। इसलिए अधिक प्रामाणिक रचना कार्यो को प्रारंभ करना अधिक महत्वपूर्ण है, ताकि विद्यार्थी सार्थक पाठ के स्वतंत्र लेखक बन सके।

# 1 असली दुनिया में लेखन

| गतिविधि 1: असली दुनिया में लेखन |
|---|
| आप अपने स्कूल और अपने समुदाय में किस प्रकार का लेखन पाते हैं? अपने किसी साथी शिक्षक के साथ, सूची तैयार करने के लिए कुछ समय निकालें। इनमें निम्नलिखित शीर्षक हो सकते हैं–<br><br>• यातायात संकेत<br>• विज्ञापन<br>• समय-सारणियाँ<br>• स्वास्थ्य संबंधी पोस्टर<br>• राजनीतिक नारे<br>• कैलेंडर<br>• धार्मिक पाठ |

- पत्रिकाएँ
- समाचार-पत्र
- पुस्तकें
- सिनेमा के पोस्टर
- स्कूल के नोटिस
- विषय के चार्ट
- उपस्थिति चार्ट।

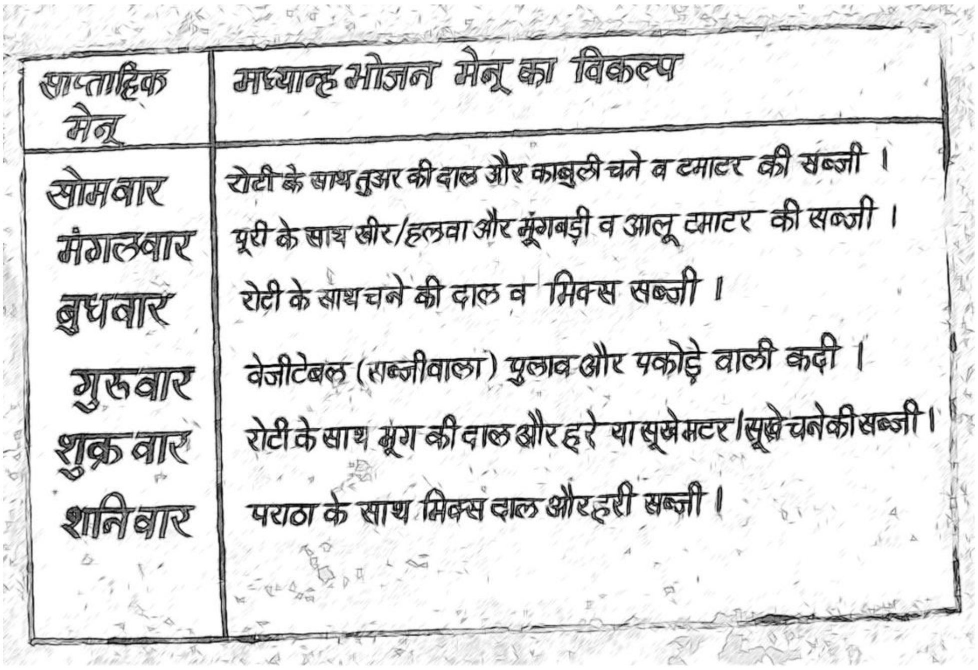


चित्र **1** एक स्कूल मेनू।

अब प्रश्नों के इन दो सेट का उत्तर दीजिए**:**

- सेट 1:
  - आपके विचार में आपके विद्यार्थी अपने घर या समुदाय में किस प्रकार का लेखन देखते होंगे?
  - इस लेखन के प्रत्याशित पाठक कौन हैं?
  - इस लेखन का क्या उद्देश्य है?
- सेट 2:
  - आपके विद्यार्थी स्कूल में किस प्रकार का लेखन करते हैं?
  - इस लेखन के प्रत्याशित पाठक कौन हैं?
  - इस लेखन का उद्देश्य क्या है?

क्या आपके विद्यार्थियों द्वारा स्कूल के बाहर देखे जाने वाले लेखन और स्कूल में उनके द्वारा किए जाने वाले लेखन में क्या कोई समानताएँ हैं? क्यों या क्यों नहीं?

केस स्टडी 1 आप एक ऐसी शिक्षिका के बारे में पढ़ेंगे, जिसने अपनी कक्षा में असली दुनिया के लेखन को उजागर किया।

### केस स्टडी 1: पोस्टकार्ड लेखन

*श्रीमती शर्मिला भोपाल के एक स्कूल में दूसरी कक्षा की शिक्षिका हैं। यहाँ वे साधारण लेखन गतिविधि का वर्णन कर रही हैं, जिसे उन्होंने अपने कम उम्र वाले विद्यार्थियों के साथ प्रयोग किया।*

गर्मियों से पहले, मुझे दिल्ली की यात्रा करने वाले अपने एक मित्र से एक पोस्ट कार्ड मिला। मैं अपने विद्यार्थियों को दिखाने के लिए उसे अपनी कक्षा में ले आई। विद्यार्थी पोस्टकार्ड के सामने वाले हिस्से में लाल किले की तस्वीर और पीछे मेरे मित्र का संदेश देख कर उत्साहित थे।

मैंने पोस्टकार्ड में अपने विद्यार्थियों की दिलचस्पी बढ़ाने के लिए एक पाठ की योजना तैयार करने का निर्णय लिया। मैंने मोटे सफ़ेद कार्ड के आयताकार टुकड़े काटे और उनमें से प्रत्येक को एक टुकड़ा सौंप दिया। फिर मैंने उन्हें एक तरफ़ अपना पसंदीदा कोई परिचित या काल्पनिक चित्र उतारने को कहा।

जब उनका काम ख़त्म हुआ, तो मैंने उन्हें दूसरी तरफ़ दो हिस्से करने के लिए कहा। दाईं ओर उन्होंने अपने घर का पता लिखा। कुछ विद्यार्थी इसे समझ नहीं पाए, तब मैंने उन्हें अपनी बात समझाई और लिखने के लिए कहा।

पते के बाईं ओर उन्होंने अपने माता-पिता के लिए एक छोटा संदेश लिखा। मैंने श्यामपट्ट सामान्य पर कुछ वाक्यों के नमूने लिखे, जैसे कि, 'प्रिय माताजी और पिताजी','आशा है आप स्वस्थ होंगे', 'आपको मेरी शुभकामनाएँ'। इस प्रकार मैंने विद्यार्थियों की मदद की। अधिक सक्षम विद्यार्थियों ने अपनी पसंद का संदेश लिखा। फिर उन्होंने अपने संदेश के अंत में अपने हस्ताक्षर किए।

मेरे प्रधानाचार्य ने पोस्टकार्ड के लिए स्टाम्प खरीदने हेतु कुछ पैसे दिए। पोस्टकार्ड के ऊपरी दाएँ हिस्से में स्टाम्प चिपकाने के बाद, मैं अपने विद्यार्थियों के साथ निकटतम पोस्टबॉक्स तक गई और उसमें कार्ड डाल दिए।

अगले सप्ताह जब पोस्टकार्ड घरों पर वितरित किए गए, तो मेरे विद्यार्थी काफ़ी रोमांचित हुए। उसे पाकर उनके माता-पिता भी बेहद खुश थे।

**विचार कीजिए**

- श्रीमती शर्मिला की पोस्टकार्ड गतिविधि ने किस प्रकार संरचना और प्रतिलेखन के बीच संतुलन स्थापित किया?
- आप बड़े बच्चों के लिए इस गतिविधि को किस प्रकार उनके अनूकूल बनाएँगें।

इस गतिविधि में विद्यार्थियों को स्वयं अपनी कल्पना का उपयोग करते हुए पाठ की रचना के लिए कहा गया, लेकिन इसे करने के लिए आवश्यक कुछ वाक्यांश शिक्षिका ने उन्हें दिए। इस प्रकार की गतिविधि में माता-पिता को संदेश का प्रेषण सकारात्मक रूप से घर-स्कूल संचार को बढ़ावा देता है। बड़े विद्यार्थियों को लिखने के लिए कई विकल्प उपलब्ध हैं। वे एक दूसरे को, या अपने किसी परिचित दूसरे स्कूल के विद्यार्थी को भी पोस्टकार्ड लिख सकते हैं।

# 2 सहभागिता के साथ लेखन

कभी-कभी विद्यार्थियों को लेखन कार्य में प्रारंभ और समापन करने में कठिनाई हो सकती है। सहभागिता के साथ लेखन कई योगदानकर्ताओं के विचारों को एक साथ जोड़ते हुए, कक्षा में इस परेशानी से बचने का एक सहकारात्मक तरीक़ा है।

सहभागिता के साथ लेखन विशेष रूप से ऐसे कम उम्र वाले विद्यार्थियों के लिए प्रभावी हो सकता है, जो पढ़ना सीख रहे हों, क्योंकि यह उन्हें विचारों को व्यक्त करने तथा बोली जाने वाली भाषा को लिखित रूप में अभिव्यक्त करने का तरीक़ा समझने में मदद करता है। तथापि, यह सभी स्तरों के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है।

अब केस स्टडी 2 के दो उदाहरण पढ़ें।

## केस स्टडी 2: विद्यार्थियों के शब्दों को लेखन में रुपांतरित करना

*सुश्री उषा इन्दौर के समीप एक ग्रामीण स्कूल में दूसरी कक्षा की शिक्षिका है।*

मैं नियमित रूप से पत्रिकाओं और प्रचार सामग्री से चित्र काटती रहती हूँ। उनमें विविध स्थान, लोग और पशुओं की छवियाँ शामिल रहती हैं। मैं जहाँ भी संभवहो, रंगीन, मज़ेदार और असामान्य चित्रों को खोजने का प्रयास करती हूँ। मेरे पास काफ़ी बड़ा संग्रह है।

मैं बारी-बारी से विद्यार्थियों के छोटे समूह के साथ इस लेखन गतिविधि को करती हूँ, जब कि कक्षा के बाक़ी विद्यार्थियों को उस समय कोई और काम देती हूँ। मैं विद्यार्थियों के समूह को चित्र के वितरण और आपस में विचार-विमर्श के लिए थोड़ा समय देते हुए शुरुआत करती हूँ। फिर मैं चित्र के बारे में कुछ कहने के लिए अलग-अलग विद्यार्थियों को आमंत्रित करती हूँ। वे जो कहते हैं उसे मैं श्यामपट्ट पर लिखती हूँ।

हर किसी के योगदान के बाद, मैं उनका कहा पढ़ कर सुनाते हुए शब्दों की ओर संकेत देती हूँ। फिर हम वाक्यों पर ध्यान आकर्शित करते हैं और उनकी एक सुसंगत कहानी बनाने के लिए उन्हें पुनर्व्यवस्थित करती हूँ। हम शब्दों और वाक्यांशों को जोड़ते हुए साथ मिल कर कहानी ज़ोर से पढ़ते हैं ताकि प्रवाह बना रहे और वह और दिलचस्प हो सके। जब हर कोई कहानी से संतुष्ट हो जाए, हम एक उपयुक्त शीर्षक पर परस्पर सहमत होते हैं।

चित्र **2** एक कहानी पर मिलजुल कर काम करता एक समूह।

फिर मैं चार्ट पेपर पर कहानी लिखती हुँ और योगदान देने वाले विद्यार्थियों का नाम लिखते हुए, कक्षा की दीवार पर उसे टाँगती हूँ।

मैं अपने विद्यार्थियों से उनकी अभ्यास पुस्तिका में कहानी को सही क्रम से अनुकरण करने और उपयुक्त चित्रों से सजाने के लिए कहती हूँ।

*श्री गुलाब जबलपुर के एक बड़े स्कूल में आठवीं कक्षा के शिक्षक हैं।*

मेरे विद्यार्थी स्थानीय बाज़ार को अधिक दूरी पर स्थानांतरित करने की सरकारी योजना के बारे में बहुत परेशान थे। इससे वहाँ से माल खरीदने और बेचने वाले समाज के कई परिवारों को असुविधा हो सकती थी।

मेरे विद्यार्थी स्थानीय राज्यपाल को एक विरोध पत्र लिखना चाहते थे। मैं इस कार्य में उनकी मदद करने के लिए सहमत हो गया। मैंने छह विद्यार्थियों के प्रत्येक समूह को एक काग़ज़ दिया और उनसे बाज़ार को स्थानांतरित करने के बारे में वे जो कहना चाहते थे, उसके मुख्य बिंदुओं को लिखने के लिए कहा।

चित्र **3** पत्र लिखते हुए।

जब उन्होंने अपना काम संपन्न किया, तो मैंने प्रत्येक समूह से पूरी कक्षा को उसे सुनाने के लिए कहा। जब वे ऐसा कर रहे थे, तब मैंने उनके विचार ब्लैक बोर्ड पर लिखे। कभी-कभी उनकी भाषा क्रोध से भरी होती थी, इसलिए मैंने उन्हें सम्मानपूर्वक अपनी बात रखने और इन बिंदुओं के समर्थन में अच्छे कारण देने का महत्व समझाया, ताकि राज्यपाल को इस मामले में ध्यान देने के लिए सहमत कर सकें। साथ मिल कर, हमने मुख्य बिंदुओं को दुबारा लिखते हुए, भाषा को और अधिक औपचारिक बनाते हुए, श्यामपट्ट पर पत्र के कई मसौदें तैयार किए।

फिर मैंने अपने विद्यार्थियों से पत्र के अंतिम संस्करण को लिखने के लिए कहा, ताकि उनके पास खुद के लिए एक प्रति मौजूद रहे।, फिर उन्होंने इनमें से एक को चुना, अपने हस्ताक्षर किए और उसे राज्यपाल को डाक से भेजा।

मेरे विद्यार्थियों का एक याचिका शुरू करने का भी विचार था, ताकि राज्यपाल को बाज़ार के स्थानांतरण के खिलाफ़ स्थानीय लोगों की भावनाओं का बल देख सके। इसलिए हमने याचिका के परिचय के रूप में इस क़दम के खिलाफ़ विरोध जताते हुए छोटा पाठ लिखने के लिए उसी साझा लेखन प्रक्रिया का उपयोग किया। मेरे विद्यार्थियों ने फिर लोगों से हस्ताक्षर करने की माँग करते हुए समाज के पास याचिका ले जाने के लिए कार्यक्रमावली की व्यवस्था की।

**विचार कीजिए**

उपर्युक्त प्रत्येक केस स्टडी के लिए निम्नलिखित प्रश्नों पर विचार करें:

- विद्यार्थियों के लेखन के पाठक कौन है और उसका क्या उद्देश्य है?
- संरचना और प्रतिलेखन संबंधी कार्य का संतुलन कैसा है?
- गतिविधियों के बीच अपने विद्यार्थियों का मूल्यांकन करने के लिए शिक्षकों के पास क्या अवसर मौजूद हैं?
- ध्यान दें कि प्रत्येक मामले में विद्यार्थियों ने किस प्रकार सहयोगात्मक और व्यक्तिगत, दोनों तरह लिखा। आपके विचार में सहभागिता के साथ लेखन के सामाजिक लाभ क्या हैं?

'समूह में कार्य' का उपयोग प्रमुख संसाधन इस चरण में उपयोगी हो सकता है।

**वीडियो: समूह में कार्य का उपयोग करना**

| गतिविधि 2: लेखन-केंद्रित पाठ की योजना |
| --- |

केस स्टडी 2 में कक्षा अभ्यास के किसी एक विवरण का चयन करें और उनके द्वारा वर्णित साझा लेखन गतिविधि के लिए एक पाठ योजना तैयार कीजिए।
यथा संभव अधिक विवरण शामिल करने का प्रयास करें। आपके लिए आवश्यक संसाधनों की पहचान द्वारा शुरुआत करें और गतिविधि के प्रत्येक चरण के लिए आवश्यक समय का पूर्वानुमान लगाना सुनिश्चित कीजिए यदि आप चाहें तो कई पाठों में चरणों को विस्तृत कर सकते हैं।
पाठों की योजना बनाने में अतिरिक्त मार्गदर्शन के लिए संसाधन 1 देखें।
प्रस्तुत है सुश्री उषा के विवरण के आधार पर योजना की शुरुआत का एक उदाहरण। तथापि, आप सारणी प्रारूप का उपयोग कर सकते हैं।

पाठ योजना: सुश्री उषा की सहभागिता के साथ लेखन गतिविधि।

उद्देश्य:

- विद्यार्थियों को सुपाठ्य लेखन के लिए तैयार करना।
- विचार, कथन और लेखन के बीच संबंध स्थापित करने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना।
- विचार प्रकाशन में क्रमबध्दता लाना।
- संकेत के रूप में चित्रों का उपयोग करते हुए जोड़ी में विचार-विमर्श को प्रोत्साहित करना।
- लेखन की गति में वृध्दि करना।
- शुद्ध वर्तनी की ओर ध्यान आकर्षित करना।
- पूरी कक्षा द्वारा कहानी रचना में योगदान देने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना।

संसाधन:

- पत्रिका से फ़ोटो या तस्वीरों की कतरनें, फ़ोटोकॉपी, जो विद्यार्थियों द्वारा स्पष्ट रूप से देखने लायक़ पर्याप्त रूप से बड़ी हों।

समय-निर्धारण:

- चित्रों से परिचित करवाने के लिए दस मिनट।
- चित्रों के बारे में विद्यार्थियों द्वारा जोड़ों में बात करने के लिए पाँच मिनट।
- चित्र क्या प्रदर्शित करते हैं, इस पर पूरी कक्षा द्वारा बात करने के लिए बीस मिनट।

अपनी कई योजना तैयार रखें, क्योंकि यह आपको ऐसा नमूना उपलब्ध कराएगा, जिसे आप आगामी गतिविधियाँ 3 और 4 में इस्तेमाल कर सकते हैं।

**वीडियो: पाठ की योजना बनाना**

गतिविधि 3: वास्तविक पाठकों के लिए लेखन और उद्देश्य

आपके विद्यार्थियों द्वारा वास्तविक पाठकों के लिए लेखन और प्रयोजन पर यथा संभव अवसरों के बारे में अपने साथी शिक्षकों के साथ विचार करें।

यहाँ कुछ संभावनाएँ दी गई हैं: आप अपने विद्यार्थियों की उम्र और अनुभव सहित आपके विशिष्ट संदर्भ के अनुकूल अन्य को भी जोड़ सकते हैं।

आपके विद्यार्थी निम्नलिखित गतिविधियां कर सकते हैं:

- अपने परिवार के लिए जन्मदिन या त्यौहार संबंधी कार्ड के लिए लिखना और चित्रित करना।
- गाँव में बच्चों के लिए सरल पुस्तकें तैयार करना।
- स्कूल के छोटे बच्चों के लिए कहानियॉ या कविताएँ लिखना।
- DIET का उपयोग करते हुए, किसी अन्य जिले या शहर के किसी कक्षा के साथ 'कलम मित्र' बनना।
- किसी लेखक, कलाकार या राजनेता को उनके काम के बारे में पूछताछ करते हुए पत्र लिखना।
- हाथ धोने का महत्व जैसे स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे पर पोस्टर तैयार करना और स्कूल में चारों ओर और बाहर प्रदर्शित करना।
- घर पर प्रयुक्त व्यंजन लिखना और कक्षा की व्यंजन-पुस्तिका का संकलन करना।
- किसी स्थानीय मुद्दे पर अपने विचार व्यक्त करते हुए स्थानीय समाचार-पत्र में प्रकाशन हेतु लिखना।
- नए विद्यार्थियों के लिए परामर्श सहित, स्कूल के लिए 'स्वागत गाइड' तैयार करना।
- उनके गाँव या जिले के लिए दिशानिर्देश तैयार करना।

आपके द्वारा सूचीबद्ध सुझावों में निम्नलिखित पर नोट्स तैयार करें:

- लेखन के वांछित पाठक कौन है? (माता-पिता, अन्य छात्र, स्थानीय लोग, आगंतुक आदि)
- लेखन का क्या उद्देश्य है? (सूचित करना, मनोरंजन, राज़ी करना, सिखाना आदि)
- आप लेखन प्रकार का नमूना किस प्रकार तैयार करेंगे? (आप अपने विद्यार्थियों को वास्तविक उदाहरण दिखा सकते हैं, उन्हें सामान्य रूपरेखा उपलब्ध करा सकते हैं, शामिल करने के लिए मुख्य शब्दों और वाक्यांशों को सूचीबद्ध कर सकते हैं, आदि)
- आप लेखन गतिविधि के अंतर्गत संरचना और प्रतिलेखन संबंधी कार्यों को किस प्रकार संतुलित करेंगे।

गतिविधि 4: अपने विद्यार्थियों के साथ साझा लेखन पाठ का क्रियान्वयन करना

अपनी सूची से किसी एक विचार का चयन कीजिए और अपनी कक्षा के साथ उसे परीक्षण करने की तैयारी कीजिए। आपके द्वारा गाइड के रूप में पहले से तैयार पाठ योजना का उपयोग करते हुए, इस पाठ के लिए नई योजना तैयार कीजिए जिसमें निम्नलिखित के विवरण सुनिश्चित हों:

- कार्य के पाठक और प्रयोजन।
- सहभागिता के साथ लेखन तत्व का स्वरूप।

- संरचना और प्रतिलेखन पर खर्च किए जाने वाले समय का संतुलन।

आप पहले गतिविधि को अपने सहकर्मियों के साथ परीक्षण करके उपयोगी बना सकते हैं। उनका फ़ीडबैक प्राप्त करें और तदनुसार अपनी पाठ योजना को अनुकूल बनाएँ। जब आप तैयार हो जाएँ, तब अपनी कक्षा में पाठ को क्रियान्वित करें।

लेखन प्रक्रिया के विभिन्न पहलुओं पर अपने विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करने के लिए, उनके द्वारा सुझाए गए सुधार की प्रतिक्रिया में, आपके द्वारा साझा पाठ में किए जाने वाले परिवर्तनों पर रनिंग कॉमेंट्री (निरन्तर उद्घोषणा) उन्हें उपलब्ध कराएँ। यह उसकी शैली के पहलुओं से संबंधित हो सकता है – उदाहरण के लिए, क्या वह औपचारिक है या अनौपचारिक, उसकी शब्दावली, या उसका अनुक्रम और प्रवाह। आगे आपके द्वारा लिखित पाठ को पढ़ कर सुनाए ताकि यह जाँच सकें कि आगे बढ़ने पर वह किस प्रकार ध्वनित होता है। ऐसा करते हुए, आप कक्षा को प्रदर्शित कर रहे हैं कि अच्छी संरचना के लिए विचार और ध्यान देने की आवश्यकता है।

इसके साथ-साथ आपको साफ़-सुथरी लिखाई और समान रूप से बीच में स्थान छोड़ने के ढंग (दो शब्दों के बीच में अंतर) का उपयोग करते हुए, समुचित विराम-चिह्न, वर्तनी तथा व्याकरण का संकेत देते हुए प्रतिलेखन कौशल का प्रदर्शन करना चाहिए। स्पष्ट करें कि इस प्रकार के विवरण कैसे अभिप्रेत पाठकों पर पाठ के समग्र प्रभाव में योगदान दे सकते हैं।

**विचार कीजिए**

- पाठ कितना सफल रहा? आप कैसे कह सकते हैं?
- आपने कैसे निगरानी की कि आपके सभी विद्यार्थी सीख रहे हैं?

साझा लेखन अनौपचारिक और सहयोगात्मक है। वह ऐसे विद्यार्थियों के लिए मददगार है जो आश्वस्त नहीं है कि क्या लिखें और जो प्रतिलेखन त्रुटि के बारे में आशंकित हैं। यह विद्यार्थियों को मसौदा तैयार करने और पुनर्लेखन की प्रक्रियाओं को प्रदर्शित करता है।

# 3 सारांश

इस इकाई में आपने अपनी कक्षा में अच्छे पाठकों और उद्देश्यों के लिए लेखन समाविष्ट करने के तरीक़ों पर विचार किया है। आश्वस्त लेखक बनने के लिए विद्यार्थियों को अभ्यास की ज़रूरत है। आप यह दर्शाते हुए उनके लेखन कौशल को विकसित करने में मदद कर सकते हैं कि लेखन उद्देश्यपूर्ण और लाभप्रद हो सकता है। आप संप्रेषण बढ़ाने के साधन के रूप में कार्य करते हुए केवल प्रतिलेखन युक्त संरचना पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। आपके विद्यार्थी भी साझा लेख पर एक साथ काम करते हुए लेखन के प्रामाणिक उद्देश्यों को भी समझ सकते हैं।

यह इकाई आपको लेखन संकेंद्रित पाठ की योजना तैयार करने का अवसर प्रदान करती है। इस प्रकार की योजनाएँ अपने शिक्षण में सफलता हासिल करने पर ध्यान केंद्रित करने में सहायक हो सकती हैं और इन योजनाओं को विविध पाठों में प्रयुक्त और विस्तृत किया जा सकता है।

## संसाधन

### संसाधन 1: पाठ की योजना बनाना

**अपने पाठों की और योजना बनाना और तैयारी क्यों महत्वपूर्ण है**

अच्छे अध्यायों की योजना बनानी होती है। नियोजन आपके अध्यायों को स्पष्ट और समसामयिक बनाने में मदद करता है, जिसका अर्थ यह है कि आपके विद्यार्थी सक्रिय और आकृष्ट बने रह सकते हैं। प्रभावी नियोजन में कुछ अंतर्निहित लचीलापन भी शामिल होता है ताकि अध्यापक पढ़ाते समय अपने विद्यार्थियों की शिक्षण-प्रक्रिया के बारे में कुछ पता चलने पर उसके प्रति अनुक्रिया कर सकें। अध्यायों की श्रृंखला के लिए योजना पर काम करने में विद्यार्थियों और उनके पूर्व-शिक्षण को जानना, पाठ्यक्रम में से आगे बढ़ने के क्या अर्थ है, और विद्यार्थियों के पढ़ने में मदद करने के लिए सर्वोत्तम संसाधनों और गतिविधियों की खोज करना शामिल होता है।

नियोजन एक सतत प्रक्रिया है जो आपको अलग-अलग अध्यायों और साथ ही, एक के ऊपर एक विकसित होते अध्यायों की श्रृंखला, दोनों की तैयारी करने में मदद करती है। अध्याय के नियोजन के चरण ये हैं:

- अपने विद्यार्थियों की प्रगति के लिए आवश्यक बातों के बारे में स्पष्ट रहना
- तय करना कि आप कौन से ऐसे तरीके से पढ़ाने जा रहे हैं जिसे विद्यार्थी समझेंगे और आपको जो पता लगेगा उसके प्रति अनुक्रिया करने के लचीलेपन को कैसे बनाए रखेंगे
- पीछे मुड़कर देखना कि अध्याय कितनी अच्छी तरह से चला और आपके विद्यार्थियों ने क्या सीखा ताकि भविष्य के लिए योजना बना सकें।

**अध्यायों की श्रृंखला का नियोजन करना**

जब आप किसी पाठ्यक्रम का अनुसरण करते हैं, तो नियोजन का पहला भाग यह निश्चित करना होता है कि पाठ्यक्रम के विषयों और प्रसंगों को खंडों या टुकड़ों में किस सर्वोत्तम ढंग से विभाजित किया जाय। आपको विद्यार्थियों के प्रगति करने तथा कौशलों और ज्ञान का क्रमिक रूप से विकास करने के लिए उपलब्ध समय और तरीकों पर विचार करना होगा। आपके अनुभव या सहकर्मियों के साथ चर्चा से आपको पता चल सकता है कि किसी विषय के लिए चार अध्याय लगेंगे, लेकिन किसी अन्य विषय के लिए केवल दो। आपको इस बात से अवगत रहना चाहिए कि आप भविष्य में उस सीख पर अलग तरीकों से और अलग अलग समयों पर तब लौट सकते हैं, जब अन्य विषय पढ़ाए जाएंगे या विषय को विस्तारित किया जाएगा।

सभी पाठों की योजनाओं में आपको निम्नलिखित बातों के बारे में स्पष्ट रहना होगा:

- विद्यार्थियों को आप क्या पढ़ाना चाहते हैं ?
- आप उस शिक्षण का कैसे परिचय देंगे?
- विद्यार्थियों को क्या और क्यों करना होगा ?

आप शिक्षण को सक्रिय और रोचक बनाना चाहेंगे ताकि विद्यार्थी सहज और उत्सुक महसूस करें। इस बात पर विचार करें कि पाठों की श्रृंखला में विद्यार्थियों से क्या करने को कहा जाएगा ताकि आप न केवल विविधता और रुचि बल्कि लचीलापन भी बनाए रखें। योजना बनाएं कि जब आपके विद्यार्थी पाठों की श्रृंखला में से प्रगति करेंगे तब आप उनकी समझ की जाँच कैसे करेंगे। यदि कुछ भागों को अधिक समय लगता है या वे जल्दी समझ में आ जाते हैं तो समायोजन करने के लिए तैयार रहें।

**अलग-अलग पाठों की तैयारी करना**

पाठों की श्रृंखला को नियोजित कर लेने के बाद, प्रत्येक पाठ को उस प्रगति के आधार पर अलग से नियोजित करना होगा जो विद्यार्थियों ने उस बिंदु तक की है। आप जानते हैं या पाठों की श्रृंखला के अंत में यह आप जान सकेंगे कि विद्यार्थियों ने क्या सीख लिया होगा, लेकिन आपको किसी अप्रत्याशित चीज को फिर से दोहराने या अधिक शीघ्रता से आगे बढ़ने की जरूरत हो सकती है। इसलिए हर पाठ को अलग से नियोजित करना चाहिए ताकि आपके सभी विद्यार्थी प्रगति करें और सफल तथा सम्मिलित महसूस करें।

पाठ की योजना के भीतर आपको सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रत्येक गतिविधि के लिए पर्याप्त समय है और कि सभी संसाधन तैयार हैं, जैसे क्रियात्मक कार्य या सक्रिय समूहकार्य के लिए। बड़ी कक्षाओं के लिए सामग्रियों के नियोजन के हिस्से के रूप में आपको अलग अलग समूहों के लिए अलग अलग प्रश्नों और गतिविधियों की योजना बनानी पड़ सकती है।

जब आप नए विषय पढ़ाते हैं, आपको आत्मविश्वासी होने के लिए अभ्यास करने और अन्य अध्यापकों के साथ विचारों पर बातचीत करने के लिए समय की जरूरत पड़ सकती है।

तीन भागों में अपने पाठों को तैयार करने के बारे में सोचें। इन भागों पर नीचे चर्चा की गई है।

**1** परिचय

पाठ के शुरू में, विद्यार्थियों को समझाएं कि वे क्या सीखेंगे और करेंगे, ताकि हर एक को पता रहे कि उनसे क्या अपेक्षित है। विद्यार्थी जो पहले से ही जानते हैं उन्हें उसे साझा करने की अनुमति देकर वे जो करने वाले हों उसमें उनकी दिलचस्पी पैदा करें।

**2** पाठ का मुख्य भाग

विद्यार्थी जो कुछ पहले से जानते हैं उसके आधार पर सामग्री की रूपरेखा बनाएं। आप स्थानीय संसाधनों, नई जानकारी या सक्रिय पद्धतियों के उपयोग का निर्णय ले सकते हैं जिनमें समूहकार्य या समस्याओं का समाधान करना शामिल है। उपयोग करने के लिए संसाधनों और उस तरीके की पहचान करें जिससे आप अपनी कक्षा में उपलब्ध स्थान का उपयोग करेंगे। विविध प्रकार की गतिविधियों, संसाधनों, और समयों का उपयोग पाठ के नियोजन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यदि आप विभिन्न तरीक़ों और गतिविधियों का उपयोग करते हैं, तो आप अधिक विद्यार्थियों तक पहुँच सकते हैं, क्योंकि वे भिन्न तरीक़ों से सीखेंगे।

**3** शिक्षण की जाँच करने के साथ पाठ की समाप्ति

हमेशा यह पता लगाने के लिए समय (पाठ के दौरान या उसकी समाप्ति पर) रखें कि कितनी प्रगति की गई है। जाँच करने का अर्थ हमेशा परीक्षा ही नहीं होता है। आम तौर पर उसे शीघ्र और उसी जगह पर होना चाहिए – जैसे नियोजित प्रश्न या विद्यार्थियों को जो कुछ उन्होंने सीखा है उसे प्रस्तुत करते देखना – लेकिन आपको लचीला होने के लिए और विद्यार्थियों के उत्तरों से आपको जो पता चलता है उसके अनुसार परिवर्तन करने की योजना बनानी चाहिए।

पाठ को समाप्त करने का एक अच्छा तरीका हो सकता है शुरू के लक्ष्यों पर वापस लौटना और विद्यार्थियों को इस बात के लिए समय देना कि वे एक दूसरे को और आपको उस शिक्षण से हुई उनकी प्रगति के बारे में बता सकें। विद्यार्थियों की बात को सुनकर आप सुनिश्चित कर सकेंगे कि अगले पाठ के लिए क्या योजना बनानी है।

**पाठों की समीक्षा करना**

हर पाठ का पुनरावलोकन करें और इस बात को दर्ज करें कि आपने क्या किया, आपके विद्यार्थियों ने क्या सीखा, किन संसाधनों का उपयोग किया गया और सब कुछ कितनी अच्छी तरह से संपन्न हुआ ताकि आप अगले पाठों के लिए अपनी योजनाओं में सुधार या उनका समायोजन कर सकें। उदाहरण के लिए, आप निम्न का निर्णय कर सकते हैं:

- गतिविधियों में बदलाव करना।
- खुले और बंद प्रश्नों की एक श्रृंखला तैयार करना।
- जिन विद्यार्थियों को अतिरिक्त सहायता चाहिए उनके साथ अनुवर्ती सत्र आयोजित करना।

सोचें कि आप विद्यार्थियों के सीखने में मदद के लिए क्या योजना बना सकते थे या अधिक बेहतर कर सकते थे।

जब आप हर पाठ में से गुजरेंगे आपकी पाठ संबंधी योजनाएं अपरिहार्य रूप से बदल जाएंगी, क्योंकि आप हर होने वाली चीज का पूर्वानुमान नहीं कर सकते। अच्छे नियोजन का अर्थ है कि आप जानते हैं कि आप शिक्षण को किस तरह से करना चाहते हैं और इसलिए जब आपको अपने विद्यार्थियों के वास्तविक शिक्षण के बारे में पता चलेगा तब आप लचीले ढंग से उसके प्रति अनुक्रिया करने को तैयार रहेंगे।

## अतिरिक्त संसाधन

- A language activity using newspapers: http://www.teachersofindia.org/en/article/classroom-sparkler-newspaper
- Some writing resources can be found on the Azim Premji Foundation website: http://www.azimpremjifoundation.org/E-learning_Resources
- You may be able to find some resources on the NUEPA website: http://www.nuepa.org/
- Support for teachers can be found on the Teacher Education website of MHRD: http://www.teindia.nic.in

## संदर्भ/संदर्भग्रंथ सूची

Black Country Children’s Services Improvement Partnership (undated) *Black Country Challenge KS1 & 2 Writing Project 2009/2010* (online). Wolverhampton: Black Country Children’s Services Improvement Partnership. Available from: http://www.gillmatthews.co.uk/images/downloads/bcc%20writing%20project_FINAL.PDF (accessed 29 October 2014).

Katahira, J. (undated) ‘Note writing in the primary classroom’ (online), ReadWriteThink. Available from: http://www.readwritethink.org/classroom-resources/lesson-plans/note-writing-primary-classroom-285.html?tab=4#tabs (accessed 29 October 2014).

Kopp, K. (2008a) *Learning through Writing, Grade 3: Authentic Writing Activities for the Content Areas*. Gainsville, FL: Maupin House Publishing.

Kopp, K. (2008b) *Learning through Writing, Grade 5: Authentic Writing Activities for the Content Areas*. Gainsville, FL: Maupin House Publishing.

Lidvall, C.D. (2008) *Get Real: Instructional Implications for Authentic Writing Activities* (online), DiscoverArchive, Vanderbilt University. Available from: http://discoverarchive.vanderbilt.edu/bitstream/handle/1803/789/CarlyLidvallCapstone.pdf?sequence=1 (accessed 29 October 2014).

O’Sullivan. O. (2007) *Understanding Spelling*, London: Centre for Literacy in Primary Education.

Pavlock, K. (undated) 'Writing for the real world' (online), ReadWriteThink. Available from: http://www.readwritethink.org/parent-afterschool-resources/tips-howtos/writing-real-world-30115.html (accessed 29 October 2014).

Wilcox, A. (undated) 'Literary resource: writing for purpose' (online), Teach Primary. Available from: http://www.teachprimary.com/learning_resources/view/literacy-resource-writing-for-purpose (accessed 29 October 2014).

अभिस्वीकृतियाँ

यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस (http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/) के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है, जब तक कि अन्यथा निर्धारित न किया गया हो। यह लाइसेंस TESS-India, OU और UKAID लोगो के उपयोग को वर्जित करता है, जिनका उपयोग केवल TESS-India परियोजना के भीतर अपरिवर्तित रूप से किया जा सकता है।

कॉपीराइट के स्वामियों से संपर्क करने का हर प्रयास किया गया है। यदि किसी को अनजाने में अनदेखा कर दिया गया है, तो पहला अवसर मिलते ही प्रकाशकों को आवश्यक व्यवस्थाएं करने में हर्ष होगा।

वीडियो (वीडियो स्टिल्स सहित): भारत भर के उन अध्यापक शिक्षकों, मुख्याध्यापकों, अध्यापकों और विद्यार्थियों के प्रति आभार प्रकट किया जाता है जिन्होंने उत्पादनों में दि ओपन यूनिवर्सिटी के साथ काम किया है।